(एक विस्तृत सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन)

छठ महापर्व : भारतीय लोक आस्था, सूर्योपासना, प्रकृति-संस्कृति और सामाजिक चेतना का बहुआयामी अध्ययन



सुव्रत दे, सम्पादक = हिन्दी-ज्योति, सम्बलपुर ,उड़ीसा
मोबाईल = 8457032905

1. प्रस्तावना– भारत की सांस्कृतिक परंपरा में अनेक ऐसे पर्व और त्योहार हैं, जिनका संबंध केवल धार्मिक आस्था से नहीं, बल्कि प्रकृति, पर्यावरण, सामाजिक जीवन, पारिवारिक संबंधों और सामूहिक चेतना से भी जुड़ा हुआ है। भारतीय त्योहारों की विशेषता यह है कि वे मनुष्य को उसके परिवार, समाज, प्रकृति और आध्यात्मिक जीवन के साथ जोड़ते हैं। इन्हीं विशिष्ट पर्वों में छठ पूजा का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

छठ पूजा भारत की प्राचीन सूर्योपासना परंपरा से संबंधित एक विशिष्ट लोकपर्व है। इसे छठ महापर्व, सूर्य षष्ठी, डाला छठ और छठी मइया का पर्व भी कहा जाता है। मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, पूर्वी उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों में प्रचलित यह पर्व आज भारत के लगभग सभी प्रमुख नगरों तथा विदेशों में बसे भारतीय समुदायों तक पहुँच चुका है।

छठ पूजा की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें किसी भव्य मंदिर, विस्तृत धार्मिक कर्मकांड अथवा पुरोहित की अनिवार्य उपस्थिति के बिना भी श्रद्धालु सीधे प्रकृति के सान्निध्य में सूर्यदेव और छठी मइया की उपासना करते हैं। नदी, तालाब, सरोवर, जलाशय, स्वच्छ जल, मिट्टी, बाँस, फल, अन्न और सूर्य का प्रकाश इस पर्व के अभिन्न अंग हैं।

इस पर्व में प्रकृति और मनुष्य के बीच एक आत्मीय संबंध दिखाई देता है। श्रद्धालु सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं, जल में खड़े होकर प्रार्थना करते हैं, धरती पर उत्पन्न फलों और अन्न को प्रसाद के रूप में समर्पित करते हैं तथा अपने परिवार और समाज के कल्याण की कामना करते हैं।

छठ पूजा की एक विशेष धार्मिक और दार्शनिक विशेषता यह भी है कि इसमें डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है और अगले दिन उगते हुए सूर्य की आराधना की जाती है। भारतीय धार्मिक परंपरा में यह दृश्य अत्यंत अर्थपूर्ण है। यह मनुष्य को सिखाता है कि जीवन में अस्त और उदय दोनों का अपना महत्त्व है। अस्त होता हुआ सूर्य भी उतना ही पूजनीय है जितना उदित होता हुआ सूर्य।

यह पर्व केवल सुख-समृद्धि और संतान की कामना का माध्यम नहीं है, बल्कि कृतज्ञता, आत्मसंयम, पवित्रता, त्याग, अनुशासन और सामूहिक सहयोग की एक जीवंत परंपरा है।

छठ पूजा को समझने के लिए इसे केवल धार्मिक दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं होगा। इसके ऐतिहासिक विकास, वैदिक सूर्योपासना, लोकविश्वास, पौराणिक आख्यानों, कृषि-संस्कृति, स्त्री-अनुभव, लोकगीत, पर्यावरण चेतना और सामाजिक संरचना का समग्र अध्ययन आवश्यक है।

प्रस्तुत शोधात्मक लेख का उद्देश्य इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में छठ महापर्व की उत्पत्ति, विकास, धार्मिक मान्यताओं, सांस्कृतिक विशेषताओं, सामाजिक महत्त्व और समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है।

2. छठ पूजा : शब्दार्थ, नामकरण और अवधारणा

छठ शब्द का संबंध संस्कृत के षष्ठी शब्द से माना जाता है। सामान्यतः यह पर्व कार्तिक शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मुख्य रूप से मनाया जाता है। इसी कारण इसे छठ अथवा सूर्य षष्ठी कहा जाता है।

हालाँकि छठ पर्व की पूजा-पद्धति केवल षष्ठी तिथि तक सीमित नहीं रहती। इसकी धार्मिक प्रक्रिया सामान्यतः चार दिनों तक चलती है। नहाय-खाय से प्रारंभ होकर खरना, संध्या अर्घ्य और उषा अर्घ्य तक इसकी विशिष्ट अनुष्ठानिक यात्रा पूरी होती है।

छठ पूजा में दो प्रमुख आराध्य रूप दिखाई देते हैं–

सूर्यदेव- प्रकाश, ऊर्जा, जीवन, स्वास्थ्य और सृष्टि के संचालन के प्रतीक।

छठी मइया- लोक-आस्था में संतान की रक्षा, परिवार के कल्याण, सुख-समृद्धि और मातृत्व से जुड़ी देवी।

छठी मइया की पहचान और स्वरूप अलग-अलग क्षेत्रों की लोक-मान्यताओं में कुछ भिन्न हो सकते हैं। अनेक लोक-परंपराओं में उन्हें षष्ठी देवी अथवा बालकों की रक्षिका देवी से जोड़ा जाता है। कुछ मान्यताओं में उन्हें सूर्यदेव की बहन के रूप में भी स्मरण किया जाता है। इन धारणाओं को एक ही पौराणिक मत के रूप में प्रस्तुत करने के बजाय लोक-विश्वासों की विविधता के रूप में समझना अधिक उचित है।

छठ पूजा की एक विशेषता यह भी है कि इसमें सूर्य की उपासना के साथ जल, पृथ्वी, वनस्पति और कृषि-उत्पादों को भी समान रूप से महत्त्व दिया जाता है। इस कारण यह पर्व प्रकृति के प्रति मनुष्य की निर्भरता और कृतज्ञता का प्रतीक बन जाता है।

3. छठ पूजा का ऐतिहासिक उद्भव एवं विकास

छठ पूजा की उत्पत्ति के संबंध में कोई एक ऐसा प्रमाणित ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है, जिसके आधार पर इसकी शुरुआत का निश्चित वर्ष अथवा स्थान बताया जा सके।

यह कहना भी उचित नहीं होगा कि वर्तमान छठ पूजा की संपूर्ण विधि वैदिक काल से बिना किसी परिवर्तन के चली आ रही है। इसके पीछे सूर्योपासना की प्राचीन परंपरा, षष्ठी देवी से संबंधित लोक-विश्वास, कृषि समाज की ऋतु-आधारित मान्यताएँ और क्षेत्रीय धार्मिक संस्कारों का दीर्घकालीन सम्मिश्रण दिखाई देता है।

छठ पूजा के ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए भारतीय सूर्योपासना की परंपरा का अध्ययन आवश्यक है।

3.1 प्राचीन भारत में सूर्योपासना

भारतीय सभ्यता में सूर्य का महत्त्व अत्यंत प्राचीन है। मनुष्य के दैनिक जीवन, कृषि, ऋतु परिवर्तन, स्वास्थ्य और जैविक गतिविधियों का प्रत्यक्ष संबंध सूर्य के प्रकाश और ताप से रहा है।

ऋग्वेद में सूर्य, सविता, मित्र और पूषा जैसे देवताओं का उल्लेख मिलता है। वैदिक साहित्य में सूर्य को प्रकाश, ऊर्जा, गति और जीवन के प्रेरक तत्त्व के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

ऋग्वेद का प्रसिद्ध गायत्री मंत्र सविता देवता को समर्पित है। इसमें सविता की दिव्य प्रेरणा से बुद्धि के सद्मार्ग पर प्रवृत्त होने की प्रार्थना की गई है।

ऋग्वेद के सूर्य-सूक्त में सूर्य के प्रकाश, गति और विश्वव्यापी प्रभाव का वर्णन मिलता है।

इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय धार्मिक चेतना में सूर्य केवल आकाश में दिखाई देने वाला एक खगोलीय पिंड नहीं था, बल्कि जीवन और सृष्टि के संचालन से जुड़ा हुआ महत्त्वपूर्ण देवतत्त्व था।

3.2 वैदिक सूर्योपासना और छठ का संबंध

छठ पूजा और वैदिक सूर्योपासना के बीच धार्मिक तथा सांस्कृतिक समानताएँ अवश्य हैं। दोनों में सूर्य के प्रति कृतज्ञता, जीवनदायिनी शक्ति की स्वीकृति और प्रकाश की महत्ता दिखाई देती है।

हालाँकि वैदिक सूर्योपासना और वर्तमान छठ पूजा की विधियों में अंतर भी है। छठ पूजा की विशिष्ट लोक-विधि, चार दिवसीय अनुष्ठान, बाँस के सूप में प्रसाद, लोक-गीत और नदी-तालाब में खड़े होकर अर्घ्य देने की परंपरा का विकास क्षेत्रीय लोकसंस्कृति के भीतर हुआ है।

इसलिए छठ को प्राचीन सूर्योपासना और विकसित लोक-परंपरा के पारस्परिक संबंध के रूप में देखना अधिक उपयुक्त होगा।

3.3 सूर्योपासना का पौराणिक विकास

पुराणों में सूर्यदेव की महिमा, उनकी वंश-परंपरा, परिवार, रथ, सारथि अरुण और विभिन्न धार्मिक आख्यानों का वर्णन मिलता है।

मार्कण्डेय पुराण, विष्णु पुराण, मत्स्य पुराण और भविष्य पुराण में सूर्य तथा सूर्योपासना से संबंधित सामग्री उपलब्ध है।

भारतीय धार्मिक साहित्य में सूर्य को आरोग्य, तेज, बल और जीवन के स्रोत के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है।

आदित्यहृदय स्तोत्र में सूर्य की महिमा का विशेष वर्णन मिलता है। रामायण के युद्धकांड में ऋषि अगस्त्य द्वारा श्रीराम को आदित्यहृदय का उपदेश दिए जाने का प्रसंग प्रसिद्ध है।

यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि सूर्योपासना की प्राचीनता का प्रमाण मिलना और वर्तमान छठ पूजा की पूरी विधि का उसी काल में प्रचलित होना–दो अलग-अलग ऐतिहासिक दावे हैं। शोध की दृष्टि से इन दोनों में अंतर बनाए रखना आवश्यक है।

3.4 कृषि संस्कृति और छठ का विकास

छठ पूजा के विकास में कृषि संस्कृति की भूमिका विशेष महत्त्व रखती है।

भारत के कृषि प्रधान समाज में सूर्य और वर्षा दोनों का जीवन से सीधा संबंध रहा है। फसल के उत्पादन, अनाज के पकने, खेतों की उर्वरता और ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था में सूर्य की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।

कार्तिक मास में धान सहित अनेक खरीफ फसलों की कटाई और नई उपज के आगमन का समय होता है। ऐसे समय में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना और कृषि-उत्पादों को देवता के समक्ष अर्पित करना ग्रामीण जीवन की सहज धार्मिक अभिव्यक्ति रही होगी।

छठ में ठेकुआ, फल, गन्ना, नारियल, चावल, गेहूँ और अन्य कृषि उत्पादों का प्रयोग इस कृषि-सांस्कृतिक संबंध को स्पष्ट करता है।

इस प्रकार छठ पूजा को कृषि समाज की धार्मिक चेतना और प्रकृति के प्रति आभार की परंपरा से जोड़कर भी समझा जा सकता है।

4. छठ पूजा से संबंधित पौराणिक आख्यान एवं लोकमान्यताएँ

छठ पूजा की लोक-प्रियता के पीछे अनेक पौराणिक आख्यान और लोककथाएँ प्रचलित हैं। इन कथाओं का महत्त्व केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं है। इनके माध्यम से भारतीय समाज ने सूर्योपासना, संतान-सुरक्षा, मातृत्व, तपस्या और संकट के समय विश्वास बनाए रखने जैसे भावों को अभिव्यक्त किया है।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि छठ पूजा की उत्पत्ति के संबंध में प्रचलित पौराणिक कथाएँ धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा हैं।



इन्हें प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

4.1 महाभारत में कर्ण और सूर्योपासना

महाभारत में कर्ण सूर्यदेव के पुत्र माने गए हैं। कुंती को ऋषि दुर्वासा से प्राप्त मंत्र के प्रभाव से सूर्यदेव का आवाहन करने पर कर्ण की उत्पत्ति हुई थी।

कर्ण को सूर्यपुत्र कहा जाता है। उनके व्यक्तित्व में तेज, दानशीलता, पराक्रम और आत्म-सम्मान के गुणों का विशेष वर्णन मिलता है।

लोक-मान्यता के अनुसार कर्ण नियमित रूप से सूर्यदेव की उपासना करते थे और जल में खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते थे। कुछ क्षेत्रों में यह विश्वास प्रचलित है कि सूर्योपासना की परंपरा को कर्ण ने विशेष लोकप्रियता प्रदान की।

हालाँकि महाभारत में कर्ण की सूर्योपासना का उल्लेख और वर्तमान छठ पर्व की चार दिवसीय विधि का प्रमाण एक ही बात नहीं है। दोनों के बीच सांस्कृतिक संबंध माना जा सकता है, लेकिन छठ की वर्तमान विधि को सीधे कर्ण द्वारा प्रारंभ किया गया था, इसका स्वतंत्र ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

4.2 दौपदी और सूर्योपासना की लोककथा

एक अन्य लोकप्रिय मान्यता महाभारत की दौपदी से संबंधित है।

लोककथाओं में वर्णित है कि पांडवों के वनवास और कठिन परिस्थितियों के दौरान दौपदी ने सूर्यदेव की आराधना की थी। सूर्य की कृपा से पांडवों को कठिन समय में सहायता प्राप्त हुई।

इस कथा को कुछ लोकपरंपराएँ छठ व्रत से जोड़ती हैं। इसमें संकट के समय धैर्य, विश्वास और परिवार के कल्याण की कामना का संदेश निहित है।

4.3 रामायण और सूर्योपासना

रामायण में सूर्योपासना का एक प्रसिद्ध प्रसंग युद्धकांड में मिलता है। रावण के साथ युद्ध से पहले ऋषि अगस्त्य श्रीराम को आदित्यहृदय स्तोत्र का उपदेश देते हैं।

इस स्तोत्र में सूर्यदेव को समस्त जगत का जीवनदाता, ऊर्जा का स्रोत और अंधकार का नाश करने वाला बताया गया है।

आदित्यहृदय स्तोत्र छठ पूजा का अनुष्ठानिक ग्रंथ नहीं है, लेकिन भारतीय सूर्योपासना की आध्यात्मिक परंपरा को समझने के लिए इसका विशेष महत्त्व है।

4.4 सीता और छठ व्रत की लोकमान्यता

कुछ लोक-कथाओं में माता सीता को भी सूर्योपासना और छठ व्रत की परंपरा से जोड़ा जाता है।

लोक-मान्यता के अनुसार लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने पर श्रीराम और सीता ने धार्मिक अनुष्ठान किए थे। कुछ क्षेत्रीय कथाओं में सीता द्वारा सूर्योपासना करने का उल्लेख मिलता है।

इन कथाओं के अलग-अलग रूप प्रचलित हैं। इसलिए इन्हें प्रमाणित वाल्मीकि रामायण के प्रसंग के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा।

4.5 राजा प्रियव्रत और षष्ठी देवी की कथा

छठी मइया के संबंध में एक लोकप्रिय पौराणिक कथा राजा प्रियव्रत से जुड़ी हुई है।

कथा के अनुसार राजा प्रियव्रत और उनकी पत्नी को संतान की प्राप्ति नहीं हो रही थी। ऋषि कश्यप के निर्देश पर राजा ने यज्ञ कराया। यज्ञ के प्रभाव से उनकी पत्नी को पुत्र प्राप्त हुआ, लेकिन वह मृत पैदा हुआ।

राजा अत्यंत दुखी हुए। तभी षष्ठी देवी प्रकट हुईं और उन्होंने बालक को जीवन प्रदान किया। उन्होंने स्वयं को ब्रह्मा की मानसपुत्री तथा बच्चों की रक्षिका बताया।

इसके बाद राजा ने देवी की पूजा की और संतान की रक्षा तथा कल्याण के लिए उनकी आराधना की परंपरा प्रचलित हुई।

यह कथा छठी मइया को संतान की रक्षिका देवी के रूप में प्रतिष्ठित करती है। विभिन्न क्षेत्रों में इस कथा के पाठ और विवरण में अंतर मिलता है।



4.6 पौराणिक आख्यानों का सांस्कृतिक महत्त्व

इन कथाओं का विश्लेषण करने पर कुछ सामान्य भाव सामने आते हैं–

सूर्य को जीवन और ऊर्जा का स्रोत मानना।

संतान की रक्षा तथा परिवार के कल्याण की कामना।

कठिन परिस्थितियों में धैर्य और विश्वास बनाए रखना।

तपस्या, संयम और आत्मानुशासन का महत्त्व।

स्त्री की धार्मिक भूमिका और पारिवारिक उत्तरदायित्व।

इस प्रकार छठ पूजा की पौराणिक कथाएँ लोकजीवन में प्रचलित धार्मिक भावनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम हैं।

5. छठ पूजा की चार दिवसीय अनुष्ठानिक परंपरा

छठ पूजा का सबसे विशिष्ट पक्ष इसकी चार दिनों तक चलने वाली व्यवस्थित अनुष्ठानिक प्रक्रिया है। प्रत्येक दिन का अपना धार्मिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक महत्त्व है।

5.1 प्रथम दिन - नहाय-खाय

छठ पूजा का प्रारंभ कार्तिक शुक्ल चतुर्थी से होता है। इस दिन को नहाय-खाय कहा जाता है।

इस दिन व्रती प्रातःकाल स्नान करते हैं। परंपरानुसार नदी, तालाब अथवा किसी पवित्र जलस्रोत में स्नान किया जाता है। इसके बाद घर की स्वच्छता की जाती है और पूजा की तैयारियाँ प्रारंभ होती हैं।

भोजन की तैयारी में विशेष शुद्धता का ध्यान रखा जाता है। पारंपरिक रूप से चावल, चने की दाल और लौकी की सब्जी का भोजन बनाया जाता है। कई क्षेत्रों में इसे कद्दू-भात भी कहा जाता है।

भोजन बनाने में शुद्धता और सात्त्विकता को विशेष महत्त्व दिया जाता है।

इस दिन का धार्मिक संदेश है– शरीर, घर और मन को आगामी साधना के लिए तैयार करना।

नहाय-खाय केवल स्नान और भोजन का विधान नहीं है, बल्कि यह आत्मशुद्धि तथा अनुशासित जीवन की शुरुआत का प्रतीक है।

5.2 द्वितीय दिन - खरना अथवा लोहंडा

छठ पूजा के दूसरे दिन को खरना अथवा लोहंडा कहा जाता है।

इस दिन व्रती प्रातःकाल से उपवास रखते हैं। सामान्यतः दिनभर अन्न और जल ग्रहण नहीं किया जाता। संध्या के समय पूजा-अर्चना के बाद खरना का प्रसाद तैयार किया जाता है।

इस प्रसाद में गुड़ की खीर, रोटी और कुछ क्षेत्रों में केले का विशेष महत्त्व है। प्रसाद बनाने के लिए परंपरानुसार स्वच्छ स्थान, शुद्ध सामग्री और विशेष विधि का पालन किया जाता है।

पूजा के बाद व्रती प्रसाद ग्रहण करते हैं और परिवार तथा आसपास के लोगों में उसका वितरण किया जाता है।

खरना के बाद कठिन निर्जला व्रत प्रारंभ होता है, जो उषा अर्घ्य के बाद पारण तक चलता है। सामान्यतः इसे लगभग 36 घंटे का व्रत कहा जाता है, हालाँकि वास्तविक अवधि पंचांग और स्थानीय अनुष्ठान के समय के अनुसार बदल सकती है।

खरना का सामाजिक पक्ष भी उल्लेखनीय है। इस अवसर पर प्रसाद का वितरण पारिवारिक आत्मीयता और सामुदायिक सहभागिता को प्रकट करता है।

5.3 तृतीय दिन - संध्या अर्घ्य

छठ पूजा का तीसरा दिन सबसे अधिक दृश्यात्मक और सामूहिक महत्त्व रखता है।

इस दिन व्रती और उनके परिवार के सदस्य पूजा की सामग्री तैयार करते हैं। बाँस के सूप, दउरा और टोकरी में फल, ठेकुआ, नारियल, गन्ना, अदरक, हल्दी, मूली और अन्य पारंपरिक सामग्री सजाई जाती है।

संध्या के समय श्रद्धालु नदी, तालाब अथवा अन्य जलाशयों के किनारे पहुँचते हैं।

जैसे-जैसे सूर्य पश्चिम दिशा में अस्त होने लगता है, पूरा वातावरण भक्तिमय हो उठता है। व्रती जल में खड़े होकर अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं।

इस समय छठ के पारंपरिक गीतों की ध्वनि वातावरण को अत्यंत भावपूर्ण बना देती है।

संध्या अर्घ्य का दार्शनिक महत्त्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

सूर्य अस्त हो रहा होता है, फिर भी उसकी उपासना की जाती है। सामान्यतः मनुष्य सफलता, शक्ति और उपलब्धियों का सम्मान करता है। लेकिन छठ पूजा हमें यह भी सिखाती है कि जीवन के अवसान, थकान और कठिन समय में भी सम्मान और कृतज्ञता का भाव बना रहना चाहिए।

यह पर्व हमें उन लोगों और परिस्थितियों के प्रति भी कृतज्ञ होना सिखाता है, जिनका योगदान प्रत्यक्ष रूप से दिखाई नहीं देता।

5.4 चतुर्थ दिन - उषा अर्घ्य और पारण

छठ पूजा का चौथा और अंतिम दिन कार्तिक शुक्ल सप्तमी को मनाया जाता है।

इस दिन व्रती प्रातःकाल सूर्योदय से पहले ही पूजा स्थल पर पहुँच जाते हैं। पूरा वातावरण शांत, पवित्र और भक्तिमय दिखाई देता है।



जैसे ही पूर्व दिशा में सूर्य की पहली किरण दिखाई देती है, व्रती उदीयमान सूर्य को अर्घ्य अर्पित करते हैं।

इसके बाद छठी मइया की पूजा की जाती है और परिवार तथा समाज के कल्याण की कामना की जाती है।

अर्घ्य के बाद व्रती पारण करते हैं। प्रसाद ग्रहण करके कठिन उपवास का समापन किया जाता है।

इसके बाद ठेकुआ, फल और अन्य प्रसाद परिवार, पड़ोसियों, मित्रों और परिचितों में वितरित किए जाते हैं।

उषा अर्घ्य का संदेश अत्यंत प्रेरणादायक है। यह जीवन में नवीनता, आशा, ऊर्जा और पुनर्जागरण का प्रतीक है।

संध्या अर्घ्य से उषा अर्घ्य तक की यात्रा हमें यह अनुभूति कराती है कि अंधकार स्थायी नहीं होता। प्रत्येक अस्त के बाद एक नया उदय संभव है।

6. छठ पूजा की प्रमुख पूजन सामग्री और उनका सांस्कृतिक महत्त्व

छठ पूजा में प्रयुक्त सामग्री का संबंध स्थानीय कृषि, प्राकृतिक संसाधनों और ग्रामीण जीवन से है। यहाँ पूजा की वस्तुएँ केवल धार्मिक सामग्री नहीं, बल्कि एक व्यापक सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा हैं।

6.1 बाँस का सूप और दउरा

बाँस से बनी वस्तुएँ छठ पूजा की विशिष्ट पहचान हैं।

सूप और दउरा में पूजा सामग्री सजाकर घाट तक ले जाई जाती है। बाँस स्थानीय ग्रामीण जीवन का उपयोगी संसाधन रहा है। इससे टोकरी, चटाई, घरेलू उपकरण और कृषि संबंधी वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

छठ में बाँस के उपयोग से पारंपरिक हस्तकला और स्थानीय कारीगरों को भी आजीविका मिलती है।

6.2 ठेकुआ

ठेकुआ छठ पूजा का सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रसाद है।

इसे गेहूँ के आटे, गुड़ अथवा चीनी और घी से बनाया जाता है। पारंपरिक रूप से लकड़ी के साँचे अथवा हाथ से विशेष आकृतियाँ बनाई जाती हैं।

ठेकुआ केवल एक मिठाई नहीं है। यह भोजपुरी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान और पारिवारिक पाक-परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है।

कई परिवारों में ठेकुआ बनाने की विधि पीढ़ी-दर-पीढ़ी महिलाओं के माध्यम से आगे बढ़ती रही है।

6.3 गन्ना

गन्ना छठ पूजा की प्रमुख सामग्री है। कई स्थानों पर गन्ने से पूजा स्थल पर मंडप बनाया जाता है।

गन्ना कृषि समृद्धि और मिठास का प्रतीक माना जाता है।

6.4 नारियल

नारियल को पवित्रता और मंगल का प्रतीक मानकर पूजा में सम्मिलित किया जाता है। यह भारतीय धार्मिक अनुष्ठानों में व्यापक रूप से प्रयुक्त होता है।

6.5 मौसमी फल और कृषि उत्पाद

केला, अमरूद, सिंघाड़ा, नारंगी, मूली, हल्दी, अदरक, नींबू तथा अन्य मौसमी उत्पाद पूजा में सम्मिलित किए जाते हैं।

इन सामग्रियों का चयन स्थानीय उपलब्धता और क्षेत्रीय परंपराओं के अनुसार बदल सकता है।

इससे स्पष्ट होता है कि छठ पूजा स्थानीय कृषि व्यवस्था और प्राकृतिक संसाधनों से गहराई से जुड़ी हुई है।

6.6 मिट्टी का चूल्हा

पारंपरिक छठ में मिट्टी के चूल्हे का विशेष महत्त्व है। कई परिवारों में प्रसाद बनाने के लिए अलग चूल्हा तैयार किया जाता है।

इससे स्वच्छता, पारंपरिक पाक-कला और ग्रामीण जीवन की स्मृतियाँ जुड़ी हुई हैं।

7. छठ पूजा में सूर्यदेव का धार्मिक एवं दार्शनिक महत्त्व

छठ पूजा का केंद्रीय आधार सूर्योपासना है। भारतीय दर्शन और धार्मिक साहित्य में सूर्य को जीवन, प्रकाश, चेतना और ऊर्जा के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया गया है।

सूर्य के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना संभव नहीं है। पौधों में प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया सूर्य के प्रकाश पर निर्भर करती है। जल-चक्र, वायुमंडलीय प्रक्रियाएँ और पृथ्वी की जलवायु व्यवस्था भी सौर ऊर्जा से प्रभावित होती हैं।

इसलिए सूर्य के प्रति मनुष्य की कृतज्ञता केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि जीवन की वास्तविक निर्भरता की स्वीकृति भी है।

(शेष पेज 24 पर)

